भूमिका ।

इस पुस्तक में दो निश भोजन कथा छपी हैं ॥

१—बड़ी भारामल्ल कृत ॥

२—छोटी भूधरदास कृत ॥

☞ पुस्तक मिलने का पता:—

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी

लाहौर ।

॥ ॐनमः सिद्धेभ्यः ॥

बड़ी निश भोजन त्याग कथा ।

॥ सोरठा ॥

प्रथम प्रणमि जिन देव, दूजै गुरु निर्ग्रंथको ।
करहुं सरस्वती सेव, दरशावे शिव पन्थ को ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु गौमत को सुमिर कै, सरस्वती को शिरनाय ।
निश भोजन की जो कथा, सुनौ भविक मनलाय ॥२॥

॥ चौपाई ॥

इस ही जंबूदीप मझारि । भरत क्षेत्र शोभै अधिकार ॥
कोक देश कंकन पुरगांव । कोक सेनराजा को नाम ॥३॥
कंकनवति तसुत्रिया वखानि । कंकन ध्वजमंत्री परिधान ॥
राजाराज करै सुखकार । दीन जननि को है प्रतिपाल । ४ ।
बसै नगरशुभ शहर अनूप । मानो स्वर्ग समान स्वरूप ।
ताही नगर एक सेठ सुजानि । पदमदत्त तसुनाम बखानि । ५ ।
पूर्व पुण्य उदय अब सोय । ताके घर लक्ष्मी बहु होय ।
बावन धुजा महल पै सार । ताकै बावन कोटि दीनार । ६ ।
सोम श्री नारी तसु जानि । शीलवन्त बहु गुणकी खानि ।
ताकै एक सुता अवतरी । जानो कमल श्री गुण भरी । ७ ।
रूपवन्त अधिके अब सोय । मानो सुर कंन्या है कोय ।
जबही आठ वर्ष की भई । निमिती पास पढनि को गई ।८।
षट महीना भीतर सार । विद्या सर्व पढी अधिकार ।
पढि करिके जु तात घर आय । सुनिकर सेठ महा सुख पाय।९।

॥ दोहा ॥

इस विधि सों वह सुन्दरी, रहति भई गृह सोय।
और कथन आगे सुनो, जो कछु जैसो होय। १०।

॥ चौपाई ॥

एक दिवश श्रीमुनि पर गई। तीन प्रदक्षिणा देती भई।
करुणानिधि तुम दीनदयाल। अरज सुनो जीवनप्रतिपाल।११।
कछु व्रत मोको दीजे सोय। जासोसार जन्म मम होय।
फेर मुनीश्वर ऐसे कही। धन्य जन्म तेरो अब सही॥१२॥
तैं जिन व्रत जाच्यो अब सोय। तो सम नारि अवर नहीं कोय।
रत्न त्रय व्रत श्रीमुनि दियो। सो सुंदरि सिर नाय सुलियो।१३।
सब विधि ताकी दई बताय। फिर बोले ऐसे मुनिराय।
जो तै जिन व्रतलीनो सार। निश परितिज्ञा करि सुखकारि।१४।
फिर सुंदरि तब ऐसे कही। याको भेद कहो अब सही।
तब बोले मुनि दीनदयाल। सुन कन्या ताकी विधि हाल।१५।

॥ दोहा ॥

दोय घरी दिन जब चढै, तब तै लेय अहार।
दोय घरी दिन के रहे, तजे चारि परकार ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

फिर सुंदरि तब ऐसे कही। हो महराज सुनो तुम सही।
किस विधि चार प्रकार अहार। ताको भेद कहो निरधारि ॥१७॥
तब बोले ऐसे मुनिराय। याको भेद सुनो मनलाय।
खाद्य स्वाद्य अर लेय सुपेय। चार प्रकार अहार तजेय ॥१८॥
इतनी सुन कर सुंदरि कही। हो ऋषिराज सुनो तुम सही।
काकों खाद्य कहैं अब सोय। स्वाद अहार कहो कहां होय॥१९॥

काको लेय पेय कहो सार। ताका भेद कहो निरधार।
तब बोले ऐसे मुनीराय। भिन्न भिन्न तू सुन मनलाय।२०।
रोटी पूरी खीर व भात। भांति भांति के भोजन जात।
पेट भरन को खावे जोय। खाद्य जो नाम धरावे सोय॥२१॥
पान इलायची मुख में धरे। आवे स्वाद पर पेट न भरे।
अथवा वस्तु सुगंधित जोय। सूंघे चित्त परफुल्लित होय॥ २२॥
नाम स्वाद्य इस का तू जान। आगे लेय का सुनले बखान।
चंदन केशर इतर कपूर। तेल फुलेल आदि कस्तूर॥ २३॥
तन से लेपन करिये आन। लेय कहावे कर परमान।
जल दुग्धादिक पीवन जोय। वह सब पेय कहावत सोय॥ २४॥
जो मुनिवरने भेद यह कहो। सो कन्या ने चित सर दहो।
मन में कन्या करत विचार। लेऊं प्रतिज्ञा यह मैं सार॥ २५॥
तब सुंदरि बोली कर जोर। हो महराज सुनो सु बच मोर।
निश प्रतिज्ञा में अब लई। तुम चरणन की शाखि जु दई॥२६॥
लेय प्रतिज्ञा निज घर जाय। सुनि के तात महा सुख पाय।
यह कथन रह्यो इस थान। आगे और सुनों व्याख्यान॥२७॥
सुन्दरी दिनदिन वढत अपार। जैसे दोयज चंद्र जु सार।
षोड़स वर्ष तनी जब भई। तबहि तात मन चिन्ता थई॥२८॥
पुत्री भई व्याह वर जोग। ताको कीजे सुभ संजोग॥
तबही प्रोहित लियो बुलाय। तासो ऐसे कही समझाय॥ २९॥
पुत्री को वर ढूंढो सार। सुंदर रूप महासुख कार॥
मोसम जोनर है धनवान। ताघर परणो जाय निदान॥ ३०॥
सेठ हुकम तब शिर पर धरो। सो अब विप्र तहां से चलो॥
देश देश फिर तो अब सोय। घर वर जोग मिले नहीं कोय॥३१॥

जह घर तह वर नाहीं सार। जह वर तह घर नहीं अधिकार॥
भ्रमत भ्रमत जब बहु दिन गये। मास छै जब बीतत भये॥३२॥
मालव देश उज्जैनी थान। पहुंचो विप्र तहां सुख मान॥
सो नगरी महिमा को कहै। स्वर्ग पुरी मानो वह लहै॥ ३३॥
ताहि नगर इकसेठ सुजान। बृषभदत्त तसुनाम बखान॥
पूरव पुन्य उदय अब सोय। ताके घर लक्ष्मी बहु होय॥ ३४॥
जाके चौरासी परिवान। खड़ी हैं ध्वजा महल पर जान॥
महासेना ताके घर नार। सो जानो गुण वंत अपार॥ ३५॥
ताके पुत्र रूप की खान। हेम चन्द तसुनाम बखान॥
ऐसो वर देखो अबसोय। मानो देव समान है जोय॥३६॥
देख विप्र तब मन में कही। यह तो जोग मिल्यो अब सही॥
कहे सेठ सो तबे सुनाय। हमरी बात सुनो मन लाय॥ ३७॥
कंकन पुर इक नगर बखानि। पद्मदत्त तह सेठ प्रधान॥
तिनके एक सुता अवतरी। कमल श्री जानों गुणभरी॥ ३८॥
सो तुम सुत कूं दीनी सोय। सुनिके सेठ महा खुश होय॥
नगर बुलावो दीनो सार। जुरे नगर के सब नर नार॥ ३९॥
जब ही पडिण्त लियो बुलाय। धरी मूहुरत दिन सुधिवाय॥
टीका चढ़ो कुंवर को सार। जुवती गावें मंगल चार॥ ४०॥
जाचिक जनको दान सुदियो। सज्जन को सन्मान सुकियो॥
विप्र विदा कीनो फिर जबै। बहुत दान दीनों पुन तबै॥ ४१॥
चाल्यो विप्र तहां से जोय। कंकन पुर पहुंच्यो अब सोय॥
कहो भेद सब ही समझाय। सुनकर सेठ महासुख पाय॥४२॥
सोरठा—महुरति दिन सुधिवाय,शुभ दिन लगन लिखाइयो॥
ब्याह होत सुखदाय,सुनहु सबै मन लायके॥ ४३॥

॥ मन हरण छंद ॥

गुण औगुण कछु नहिं जानों। वर देखि स्वरूप लुभानो ॥
सम्पति देखी अति भारी। कुछ और न बात बिचारी ॥ ४४ ॥
वह शिव मत में रति होई। जिन मत जानो नहिं कोई ॥
शिवही को पूजन ठावे। शिवही को ध्यान लगावे ॥ ४५ ॥
वह जैन धुरंधर नारी। यह शिव मत को अधिकारी ॥
कैर बेर को संग भयो जू। सोतो करतार ठयो जू ॥ ॥ ४६ ॥
टीका दिन जब ही आयो। घरको तब सेठ सजायो।
हय गय रथ बाहन भारी। चव रंग दल सजे सुख कारी ।४७।
अरबी सुतुरी तह साजे। करतालन की ध्वनि गाजे।
इत्यादिक शोभा जानो। सजि चल्यो महासुख मानो।४८।
अब कछुक दिनन के मांही। पहुंच्यो कंकन पुरजाई ॥
डेरा बागन में दीने। नेग चार तहां बहुकीने। ४९।
षटरस भोजन सुखकारी। दीने नाना परकारी ॥
निश एक पहर सुगई जू। तबही बारौठी भई जू। ५०।
सजि सेठ चल्यो तब भारी। हय गय रथ बहु असवारी।
बहु विध करि बाजे बाजैं। नौवत खाने तह गाजैं। ५१।
इस बिधि दरवाजे आये। बर देखजु सेठ लुभाये ॥
शोभा दीनो अति भारी। नाना विधि को अधिकारी ।५२।
फिर आये डेरन मांही। तब हुये अनंद बधाई ॥
सांतीन दिवस सुखकारी। कीनो सनमान जु भारी। ५३।
चौथो दिन लागो जब ही। फिर करी बिदा तिन तब ही ॥
पुत्री को सेठ समझावे। तासों कैसे बतलावे। ५४।
कुलटेक चलो तुम सोई। तामें मेरी हंसी नहि होई ॥

तुम ते जेठी जो होई। भूलि उत्तर देहु न कोई।५५।
अरसासु हुकम शिर धारो। यह आज्ञा हमरी पारो।
तुम निश परतिज्ञा कीनी। सो दृढकरि पालि प्रवीणी। ५६।
इस विधि करि शिक्षा दई है। सुंदरि चित धारि लई है।
तहतैं कूच करो अति भारी। दिन निश में सुनो नर नारी।५७।
फिर कछुक दिननिके मांही। पहुंचे उज्जैनि सुजाई॥
घरमें बहू लीनी सारा। गावै जुवती मंगल चारा॥ ५८॥
जाचिक जन दान सुदीने। सज्जन सन्मान सुकीने॥
इस विधि सों व्याहघर आये। तहां करत अनंद बधाये। ५९।

॥ दोहा ॥

इस विधि सों अब व्याह कर, निज घर आये सोय।
और कथन आगे सुनो जो कछु जैसो होय। ६०।

॥ चौपाई॥

न्योतो फिरो सब नगर मझार। न्योते तहां सवै नर नारी।
पर जन लोग जुरे सब सार। आगे और सुनो विस्तार॥६१॥

॥ दोहा॥

दिन छिपयो निस जब भई, चढ़ी रसोइ सोइ।
और कथन आगे सुनो, जो कछु जैसो होय। ६२।
फिरो बुलावा नगर में, नर नारी जुरे आय॥
एक पहर निश बीतियो, भोजन करे बनाय। ६३।
डेढ पहर निश जब गई, जीमो सब परिवार।
यह देखो जब सुंदरी, मन में करत बिचार। ६४।
जिन मत ते जाने नहीं, शिवमत में रतिसोय।
अरे विधाता क्या करी, दुख मैं डारी मोय। ६५।

॥ चौपाई ॥

आधी रैन जु बीती जबै। और सुनो नर नारी सबै।
घर की त्रिया जबै रहै गई। तब ही सासु बहू पर गई ॥ ६६ ॥
उठो बहू भोजन करि लेहु। सब जन मन कू आनंद देहु।
फिर बोली कैसे बरनार। सास बचन सुनियो सुखकार ॥६७॥
निश कूं भोजनकरहिजुकोय। पशु सम सो नर नारी होय।
यह वरणी जिनमत के माहिं। निश खावे सो नरके ही जाय॥६८॥
सुनियो सासु हमारी सोय। निश को भोजन करहु न कोय।
इतनी सुन कर सासु जु कही। बहूबात सुनियो अब सही ॥६९॥
पीहर धर्म जु छांडो सबै। मेहर धर्म जु पालो अबै।
याते समझो तुम मन मांहि। यह तो अब निबहन की नांहि॥७०॥

॥ गीता छंद ॥

इतनी जु सुन कर तबै सुंदरी, सासु सों ऐसे कही।
मैं और आज्ञा सबै पालूं, धर्मनिज त्यागूं नहीं।
निश करहि भोजन नारि नर,जे नरक गति परि हैं सही।
यातें सुनो तुमसासु मेरी, मैं असनकर हों नहीं॥७१॥

॥ चौपाई ॥

ताते सासु सुनो तुम सही। मोसे हठ कीजे कुछ नहीं।
इतनी सुनकर जब ही गई। जाय सेठ सों कहती भई॥ ७२॥
हमरे घर में बहू यह जोय। कुल नाशन जानो अब सोय।
हमरे धर्म की निन्दा करे। पीहर धर्म जु मन में धरे॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

ठाढै ठाढै मोहि वहां, भई घरी अब चारि।
नेक जुवाब न देत है, गर्ब गहेली नारि ॥ ७४ ॥

चौपाई ॥

फेर सेठ तब कैसैं कही। वासों हठ कुछ कीजै नहीं।
दिन में भोजन देवो सार। समझि चलेगी कुल आचार॥७५॥
त्रिया जाति अति चंचल होय। मन में गांठि दई अब सोय।
देखूं याको धर्म्म जु सार। कबलों भूखी रहे यह नारि॥७६॥
क्षुधा बडी इस जग में सोय। मुनिजन धीर धरै नहि कोय।
निश ही भोजन देऊ सोय। जब आधीन नार यह होय॥७७॥
यक दिन ताहि वितीत जो भयो। अन्न सु जल त्यागन करदियो।
उर में जपै पंच नव कार। धीर प्रतिज्ञा पालन हार॥ ७८॥
दूजे दिन की निश जब भई। तब ही सासु बहू पर गई।
उठो बहू भोजन कर लेहु। क्यों दुःख वृथा शरीरैं देहु॥७९॥

॥ दोहा ॥

अब हू हठ पूरो बहू, तेरो भयो न कोय।
अब जिन धर्म जु छांड़िदे, शिव मत गहो जु सोय॥८०॥

॥ मनहरण छंद ॥

बोली जैन धुरन्धर नारी। सुनियो तुम सासु हमारी।
अब कहा गयो मुझ खोई। जासों समझावत मोही॥ ८१॥
निर ग्रंथ गुरुनि की पठाई। मोहि क्या समझावन आई।
जो मर हू क्षुधा से सोई। इक ही भव नाश जु होई॥ ८२॥
जो धर्म हि छाडे कोई। दुख भव भव पावे सोई।
प्राण जाहू तो जाऊ दुखारी। नहि तजूं धर्म अति भारी॥
तातै सासु सुन लीजे। मो सूं हठ कुछ नहीं कीजे॥ ८३॥

॥ चौपाई ॥

फेर सासु ताकी घर गई। आगे सुनो और सो भई।

बहुत बात को कहे बढाय । तीन दिवस बीते अब ताहि ॥ ८४ ॥
अन्न सुजल त्यागन करदियो । पंच परम गुरु सुमरण लयो ॥
इस विधि धीरज धरियो नारि । सामायिक सों करे त्रिकाल ॥८५॥
चौथो दिवस लग्यो अबसार । घर आयो हेमचंद कुमार ॥
तासु माय फिर ऐसे कही । कुंवर बचन सुनियों अब सही ॥८६॥
हमरे घर में बहू वह जोय । कुल नाशन जानो अबसोय ॥
हम सुधर्म्म निंदे वह नारि । जिनवर धर्म्म जुपालन हारि ॥८७॥

॥ दोहा ॥

तीन काल मानस सबै, कोसे हि मारे सोय ॥
याके पाप थकी अबै, कुल को नाश जू होय ॥ ८८ ॥

॥ चौपाई ॥

इतनी सुन कर कुंवरा कही । वाको हठ पूरो करो सही ॥
दिन में भोजन दीजो वाहि । ताका उपाय करूं मैं आहि ॥ ८९ ॥
चौथो दिन लागो पुनि जबै । एक पहर दिन चढ़ियो तबै ॥
मौन गहे बैठी वह नारि । उरमें जपे पंच नवकार ॥ ९० ॥
तवही सासु बहूपरि गई । तासों ऐसे कहती भई ॥
उठो बहू भोजन कर सार । भयो जो हट पूरो तुम नारि ॥९१॥
इतनी सुन कर सुन्दरि जबै । मन में आनन्द कीनो तबै ॥
कर असनान महा सुख कारि । उजरे कपड़े पहरे सम्हार ॥९२॥
जिनवर भवन पहोंची जाय । श्री जिनवर को दरश कराय ॥
वहु विधि थुति कीनी अब सार । फिरआई निजग्रेह मझार ॥९३॥
फेर सासु सो कैसे कही । हमरी बात सनो अब सही ॥
निज कर सों जु रसोई करूं । तबही अपनो उदर जु भरूं॥९४॥
इतनी सुन करके रिस भई । अग्नि समान जु कोपी सही ॥

पुत्र कहे ते रसोई करी। जो सुन्दरि ने मन आदरी ॥ ९५ ॥
आपुन करी रसोई जबै । भोजन कीनो सुन्दरि तबै ॥
भई प्रतिज्ञा पूरण सोय । कुल की बात यही सम होय ॥९६॥

॥ दोहा ॥

चौथे दिन तब सुन्दरी, भोजन कीनो सोय ॥
और कथन आगे सुनो, जो कुछ जैसो होय ॥ ९७ ॥

॥ चौपाई ॥

फिर घर से वह चलो कुमार । सो पहुंच्यो बनखण्ड मझार ॥
इक जोगी सो ऐसे कही । वाय तेल के कारन सही ॥ ९८ ॥
सर्प एक चहिये विकराल । पांच दये ताकुं वह दीनार ॥
तव जोगी वह गुफा में गयो । मंत्र के जोर जु झाड़त भयो॥ ९९ ॥
बहु विकराल भुजंग जु सोय । मानों काल स्वरूप जु होय ॥
तबही नाग घड़े धरदियो । आय कुंवर कुं देतो भयो ॥१०० ॥
ढकना धरो जुतापरि कोय । कुंवरालेचालो घर सोय ॥
सेजथान चित्र सारी जहां । जाय घड़ा धरिदीनो तहां ॥ १०१ ॥
आधी रैन बीति जब गई । सेज पै सुन्दरी पोंहचति भई ॥
ताके बलम कही समझाय । हमरी बात सुनो मन लाय ॥ २ ॥
तुम पीहर घर ब्याहु जु कोय । तुझे बुलाया वामें सोय ॥
तुमरे काज घड़ायो हार । सो अब धरो जु घड़ा मझारि ॥ ३ ॥
ताकुं पहिरो तुम अब जाय । सुन्दर हार बनो अधिकाय ॥
इतनी सुनकर सुन्दरि जबै। उठी हारके कारण तबै ॥ ४ ॥
सुन्दरि तो जाने नहिं कोय । कपट रूप तसु बलमा जोय ॥
यह तो कथा रही इस थान । आगे और सुनो व्याख्यान ॥ ५ ॥

॥ पद्धड़ी छन्द ॥

वहां प्रथम स्वर्ग के मध्य सोय। सौ धर्म्म इंद्र बैठो जो होय॥
लागी जु सभा तिनकी अनूप। सब देव जुरे बैठे स्वरूप॥ ६॥
तव अवधि ज्ञान करके जुसार। भुवकी सब जानी बात हार॥
देवनि सो भाषै तब सुरेश। हम बात सुनो निहचै अशेस॥७॥
इकत्रिय तो है भुवलोक माहि। अनि जैन धुरंधर धर्म्म ताहि॥
जिस निस परतिज्ञा लई सार। मुनिराज शाषिदीनी वहनार॥८॥
तसु पूरव कर्म उदैसे जोय। शिवमत को पति तिस मिलो सोय।
तसु बालम कीनों सो उपाय। जो प्राण हरण के काज थाय।९।
ताकूं घट में वह बताय हार। जो कपट रूप जाने न नारि॥
सुन्दरि जे घड़ाके पासि जाय। ता में विकराल भुजंग थाय।१०।
डारे जब हाथ वह घड़ा मांहिं। तव सर्प डसे तसु प्राण जाय॥
जो प्राण तजै वह नारि सार। तौ धर्म्म उठे सब जग मझार। ११।
जिन राज धर्म्म को नाश होय। फिर नहीं प्रतिज्ञा करे कोय।
तवनाग जाति को देवसार। बुलवायो तब गुरराय हाल। १२।
तुम जाहु सुतो भुवलोक मांहि। तसु प्राण बचे सो करो उपाय॥
इक मणि मय हार घड़ा मझार। धरियो पहिरे तब नारि सार।१३।
हरि हुकम थकी चालो सुदेव। क्षण विलम्ब करो नहिं तहां भेव।
चित्रसारी के माहिं आय। तब तुच्छ रूप कीनो बनाय।१४।
तब बैठो घट में देवसार। सोपगतलै दाबो सर्प हाल।
मणिमयसुहाररचियोजुसोय। जो जगमग जगमग ज्योतिहोय।१५।
सुन्दरि पहुंची जब घडे पास। करडार सो काढो हार तास।
मणि दीपक उजरे तहां सोय। सो देख हार तब खुशी होय॥१६॥
चौदह जुलड़ी को हार जान। जिंह कंठ धरो तब हरष ठान॥

वह सहजही सुन्दरी रूप सार। अति रूप बनों जब पहिरो हार।१७
देखो बालम विस्मय जु होय। क्या देवगती यह भई सोय।
मैं सर्प धरो विकराल रूप। सो हार भयौ मणिमय अनूप।१८।
फिर जाय बलम सो कहै सोय। तुम धन्य बलम हमरे सु होय।
मम तात हू के अति लक्ष जान। अैसो न हार देखो महान।१९।
तुम याको पहरो कंठ सार। अति रूप लगे तुमरा अपार।
फिर हँस करके सुंदरि जु सोय। पति कंठ धरो अति खुशी होय।२०।
तहां सर्प भयो विकराल रूप। फुंकार डसो कुंवरा अनूप।
तब मृतक भयो जबही कुवार। देखो चरित्र अदभुत यह नार।२१।
अब पास खड़ी ताके जु वोय। सुंदर अति रुदन करे जु सोय।
अब कहा विधाता कियो आय। मुझ लगो कलंक जु अबै धाय।२२।
सब कुटम कहे गो यही सार। याही पति मारो अवे हाल॥
सो रुदन करै ऐसो जु सोय। आंसू प्रवाह दृग चले जोय।२३।
अब ल्हाश धरी तबगोद मांहि। सो नेंक धरी धरती जु नही।
जिस भांति बिलाप करेजु सोय। तसु वर्णन कहां लो कहे कोय।२४।

॥ मन हरण छन्द ॥

हाय तात कहा तुम किनो। घर बर तुम देख न लीनो॥
यह शिव मत के अधिकारी। मैं जैन धुरंधर नारी॥ २५॥
अैसी तुम काहे कीनी। कुछ बात बिचार न लीनी॥
इन मोको इसे बिचारो। अब मेरो जन्म विगारो। २६।
अैसो रुदन करे तब नारी। वह तो चित्र जी सार मझारी।
छै मास तुल्य निश जा को। अब बीतत वह निश ताको।२७।
जब प्रातभयो ततकाला। जागे सुकुटंब परिवाला॥
यह देख चरित्र जु जबही। फिर सासु पुकारी तबही। २८।

मैं तब हि कही सुबनाई । कुल नाशन को यह आई ॥
सो तो चढ के चित्र वह सारी । इस विधि सो करी पुकारी ॥२९॥
नर नारी नगर के जब ही । जुरि आये सो सारे तब ही ॥
फिर सेठने ल्हाश उठाई । राजा की सभामें पहुंचाई ॥३०॥
दरबार में तब धर दिनी । अरु कैसे पुकार सुकिनी ।
महाराज अरज सुनि लीजे । यह अरजी चित में दीजे । ३१ ।
हम घर में बहू यह आई । कुलनाशन अति दुख दाई ॥
या मारो पुत्र हमारो । अपनो बलमा हती डारो । ३२ ।
ताते महराज सुनीजे । हमरो जी न्याव करीजे ॥
इतनी सुनकर तवराई । नगरी में डौंडी पिटाई । ३३ ।
सब जौहरी साहु बुलाये । नृप के दरवार में आये ॥
मंत्री परधान जु सब ही । बैठे सु सभा में तब ही । ३४ ।
मंत्रिन सूं भूप कही जू । याको करिये न्याव सही जू ॥
तब मंत्री कहे तह कैसे । महाराज सुनो तुम ऐसे ॥३५॥
चित्रसारी के जी माहीं । दोऊ नारि पुरुष तीजो नाही ।
निश्चयपति याने मारो। ताको क्या अन्याव विचारो ।३६।
कोऊ कहे कोट चिनावो । कोऊ भुसा खाल भरावो ।
कोऊ कहि सूली दीजे । कोऊ कह बाहिर कीजे । ३७ ।
निज निज सब भाखे जाई । नृप मन में एक न आई ।
न्यायवन्त भूप अति सोई । मन में सुबिचारे जोई । ३८ ।
यह जैन धुरंधर नारी । सुदया व्रत पालन हारी ।
याते ऐसो काज न होई । निहचै यह कारण कोई ॥ ३९ ॥
तब भूप कहे मन मांही । जाको कौन बिचार कराई ।
तब नृप जशबल पठवाई । सुन्दर दरबार बुलाई । ४० ॥

तासों नृप राय कही है। पुत्री सुन बात सही है।
मन शोच करो मति कोई। तेरो न्याव करूं मैं सोई ॥४१॥
कैसे बात भई जिह सारा। मोसो कह अब सब ततकारा ॥
फिर सुन्दरी एम कही है। महराज सुनो जु सही है ॥ ४२
यह तो बहुत पुरुष हैं सोई। मैं तो एक अकेली होई ॥
कैसे कहूं बात मैं सोई। जो होन हार सो होई ॥ ४३

॥ चौपाई ॥

ये जो कहें सो सांचीसार। मेरी तो झूठी भूपाल ॥
एक बात भाखौ मैं सोय। करिदीजे अब न्याव जु मोहि ।४४।

॥ छन्द ॥

जल अर दूध इकठ्ठो हों भूपाल जू। हंस करैसु जुदो जुदो सुकारजू
ऐसोन्यावनृप तिमेरोकरिदीजिये। होतुममेरेतातअरजसुनलीजिये।

॥ चौपाई ॥

नातरि सुन लीजो भूपाल। प्राण तजूं तुमरे दरबार ॥
इतनी सुनकर भूपति जबै। दई दिलासा ताको तबै ॥ ४६ ॥
फिर मन में सु विचारे राय। किस विध न्याव करो सुबनाय ॥
स्त्री मारे तरयां दोय। कि हथियार कि बिष सो जोय ।४७।
सो मरणो दीसे अबनहीं। यह अचिरज की बात जु सही
किस विधि मरण भयो यह आय। सो कुछ अब जानी नहिं जाय।४८।

॥ मन हरण छंद ॥

मन में तब भूप विचारी। इसे सर्प डस्यो कोई भारी ॥
अरु कारन दीखे ना कोई। मन में सु विचारै सोई ।४९।
तब कहै भूप मन मांही। जोगिनि से भेद पूछाई।
तब हि जशबल पठवाये। तिनसौ तब हुकम कराये ।५०।

जितने जोगी जोपावो। तिनको जु बांधिकर लावो।
महराज हुकमते सोई। चाले हुण ढीलन कोई।५१।
नर नारि सभाके सब ही। मन में सुविचारें तबही।
काहे को जोगी बुलावै। तिन पै क्या न्याव करावै।५२।
जितने नगरी में पाये। तिनको वह बांध कर लाये।
पाये बन खण्डन माहीं। तिनकी मुसकै जु चढाई।५३।
अरुपाये गुफनि में सोई। जोगी एक बचो नहीं कोई।
अब भूप कचहरी लाये। नृपति के पायन गिराये।५४।
महाराजने सूली गडाई। सो तौ दरबार के माई।
तब भूप कही पुनि सोई। जोगी बात सुनो सब कोई।५५।
जैसे यह बात भई है। हमने सुन सर्व लई है।
ताते ज्यूं की त्यूं ही कहीजै। नहीं सूली देख यह लीजै।५६।
सबको यम लोक पठाऊं। जोगी एक जी नाहीं बचाऊं॥
तब जोगी एक उर आनो। यह भूपति सब ही जानो॥ ५७॥
जो करहू छिपाव जु कोई। निश्चय मुझमरणो होई॥
भूपति सों तब कर जोरे। महाराज सुनो बच मोरे॥ ५८॥
महाराज अरज सुनि लीजे। मम अरजी चित में दीजै॥
चूक माफ हमारी होई। खबरे सुनियो अब सोई॥ ५९॥

॥ चौपाई॥

मोपै गयो सु यह जो कमार। कहत भयो तब ही निरधार॥
बाय तेल के कारण जान। सर्प एक दीजे मुझे आन॥ ६०॥
मोकूं दिये यह पंच दीनार। सो तुम आगे धरे यह सार॥
मैंने सर्प दियो अब सोय। मैं कछु फिर जानो नहीं कोय॥ ६१॥
इतनी सुन कर सब नर नार। अचरज रूप भये अधिकार॥

फिर भूपति तब कैसे कही। धन्य जन्म अब तेरो सही ॥ ६२ ॥
मैं तो तब ही भाखी सोय। याते ऐसो काज न होय ॥
सब नर नार कहे अब सार। धन्य जन्म जाको अवतार ॥ ६३ ॥
धन्य भूप अब जे जगमाहि। न्यायवन्त जानो सुखदाय ॥
आछो काज बन्यो है सोय। या सम नृपति और न कोय॥६४॥
तब भूपति फिर कैसे कही। सुन्दरि बात सुनो तुम सही ॥
तेरो न्याव भयो अब सोय। तोसम नारि अवर नहि कोय ॥६५॥
अब हू भेद कहो समझाय। किस विधि भयो चरित्र बनाय ॥
फिर सुन्दरि तब कैसे कही। हो महराज सुनो तुम सही ॥ ६६ ॥
कहन जोग दरबार सु नाहि। शील घटे मेरो सुबनाय ॥
अवर कहे बिन चले न कोय। हो महराज सुनो तुम सोय॥६७॥
जब ही मैं जु सेज पर गई। मो सों भरता ने तब ही कही ॥
तुमरे काज घड़ायो हार। सो अब धरो घड़ा सु मझार ॥६८॥
सो तो पहिरो तुम अब जाय। मैं जु उठी तहतैं हरषाय ॥
कपटरूप जानो नहि कोय। पासि घड़ाके पहुंची सोय।६९।
कर डारो जु घड़ा में जबै। मणिमय हार निकालो तबै।
चौदह लड़ को सो वह हार। मैं डारो उर में भूपाल ॥७०॥
फिर हंस करके पति उर मांहि। मैं डारो कुछ जान्यो नांहि ॥
तहां भुजंग भयो विकराल। तब डस लीनो यह भरतार ॥७१॥
ऐसे मृतक भयो यह कंत। सुन लीजो तुम भूप महंत।
फिर बोलो तब कैसे राय। धन्य जिनेश्वर धर्म सहाय।७२।
तोसम नारि अवर नहि कोय। तेरो सार जन्म अब होय।
फेर नृपति फिर कैसे कही। सुन्दरि बात सुनो तुम सही।७३।
एक बात सुनियो अब नारि। जो अब जीवे तुम भरतार।

तो जिन धर्म सत्य तुम होय। जसवाढे तेरो अब सोय।७४।
फिर सुन्दरि तब कैसे कही। हो महराज सुनो तुम सही।
ऐसी बात कहां अब सोय। जो जिन धर्म थकी नहि होय।७५॥
एक बचन दीजो भूपाल। जो जीवे मेरो भरतार।
तौ नृप तुमरे राज सुमाय। जिनवर धर्म चले सुखदाय॥७६॥
और एक भाषूं अब सोय। मेरो इन को संग न होय॥
इतनी सुनकर भूपति कही। सुन्दरि बात सुनो तुम सही॥७७॥
अव जो हुक्म सु तेरो होय। सोई बात करूं में सोय॥
यह चरित्र अब देहु दिखाय। महिमा जैन धर्म की थाय॥ ७८॥
फिर बोली कैसे बरनार। हो महाराज सुनो सुखकार॥
घड़ी चार पीछे भूपाल। फिर आऊं तुमरे दरबार॥ ७९॥

॥ सोरठा॥

आऊं न जौलौ मैं,तौलौं सभा तुमारी सबै।
सो बरषास न होय,भूपति सुनि लीजो अबै॥८०॥

॥ चौपाई॥

गई तहां एकान्त सुथान। सुन्दरि ने कीने असनान।
पहिरे अंग दक्षिण के चीर। गहने पहिरे सर्व गंभीर॥ ८१॥
श्रीजिन भवन पहुंची जाय। श्रीजिन पति कूं सीस निवाय॥
अरज करी कैसे सिरनाय। सो सुनियो सब ही नरनारि॥८२॥

॥ सोरठा॥

मन वच क्रम कर भाय, अरज करे तब सुन्दरी,
सो सुनियो मन लाय, कहिये जाय गुण की भरी॥ ८३॥

॥ चौपाई छंद॥

करुणा सागर अरज हमारी। तारण तरण सदा सुखकारी।

दीनानाथ ,अनाथन नाथा। विनती करूं जोर जुग हाथा ॥८४॥
दीनदयाल अरज सुन लीजो। यह अरजी प्रभु चित में दीजो।
करुणानिधि सुनजोतुमसोई। तुम विन दूजो अवर नकोई ॥८५॥
श्रीपाल सागर में परो। सो तुम छिन में पार जु करो॥
सेठ सुदर्शन सूली दीनो। ताकू तुम सिंहासन कीनो॥८६॥
सीय तो पावक कुण्ड परी जू। सरवर कीनो ताहि घरी जू॥
अंजना चोर अधम अघ कीनो। ताकू तुम प्रभु सुरपद दीनो॥८७॥
मेरी वार श्रीजिन राई। क्या तुम ढील करी सुखदाई॥
भरता मृतक भयो अवसोई। लास धरी दरबार में कोई॥८८॥
भूपतिने मोसूं हठ कीनो। मैं प्रभु शरण तुमारो लीनो॥
मातपिता तुम ही जगमांही। तुम बांधव तुम मित्र बनाई॥८९॥
तुमरे भरोसो हो महाराजा। जाति सभा में गरीब निवाजा॥
जो भरता जीवे सुखकारी। तो जिन दीक्षा लेहु सवारी॥९०॥
जो नहि जीवे मुझ भरतारा। तो मैं प्राण तजूं ततकाला॥
ताते करुणा निधि सुन लीजे। अब के पत मेरी रख दीजे॥९१॥
मैं तो जिनवर दासि तुमारी। अब के राखो लाज हमारी॥
इतनीअरजकरसुन्दरी तब ही। सो दरबार पहुंची जब ही॥९२॥
देखें सभा सकल नर नारी। भूपति देखे तह सुखकारी॥
सुन्दरी जप्यो पंच नवकारा। मनवच तन करके अति सारा॥९३॥
भक्तामर को काव्य महाना। इकतालीशम सो परधाना॥
रक्तेक्षण जु महा सुख कारी। मनवच तनकर सुमिरो भारी॥९४॥
एक चुल्लु जल कर में लीनो। सो भरतार के नेत्रन में दीनो॥
तब नारी जगी वह सारा। आगे और सुनो विस्तारा॥९५॥
फिरके जपो पंच नवकारा। रक्तेक्षण जु काव्य सुखकारा॥

द्वितीयचुल्लुजलकरमें लीनो। सो बलमा के नेत्रन दीनो ॥९६॥
सो करवट देह भई तह सोइ। आगे और सुनो सो होई ॥
फिर कैं जप्यो पंच नवकारा। रक्तेक्षण वह काव्य जु सारा ॥९७॥
तृतिय चुल्लु जल करमें लीनो। सो फिर सईयां नेत्र में दीनो ॥
ऐसे कुंवर उठ्यो भहराई। मानो सूतो सेजन मांही ॥ ९८ ॥
जय जय शब्द गगन में होई। बैठे देव विमानन सोई ॥
ते कहि धन्य धन्य तू नारी। धन्य प्रतिज्ञा पालन हारी ॥९९॥
तेरी इन्द्र सभा के मांही। सुन्दर सो अब करत बडाई ॥
तो सम त्रिया अवर नहिं कोई। तेरो सार जन्म जग सोई ॥२००॥
फिर भूपति तब ही कर जोरे। सुन्दर सो तब करत निहोरे ॥
इन्द्रि जु तेरो करत बडाई। तो हम परिजु कही कहजाई ॥२०१॥
धन्य तात अरमात सु तोई। ता घर जन्म लयो अब सोई ॥
धनिजिनधर्म सुई जग मांही। तासम दूजो अर सु नाही॥२॥
यह सुन सुन्दरि विनवे सोई। मेरो इन सो काम न कोई ॥
मैं तो जाय अरण के माही। जिन वर दीक्षा लूं सुखदाई ॥ ३ ॥
कही सभा भूपति सुन लीजे। मो ऊपर सब क्षमा करीजे ॥
सासु ससुर सो क्षमा कराई। अब तो जाय अरणके मांही ॥ ४ ॥
श्रीमुनिवर पै दीक्षा लीनी। पंचमहाव्रत धार प्रवीणी ॥
इस विधि सों जु अरणके मांही। भई अर्जिका अर सुखदाई॥५॥
तब भूपति डौंडी सु दिवाई। श्रीजिनधर्म चले सुखदाई ॥
इसविधिसों नृपराजसुमांही। प्रगटायो श्रीजिन धर्म बनाई ॥ ६ ॥
अब सुन्दरि सु अरण के मांही। दुद्धर तप कीनो सु बनाई ॥
अंत समाधि मरण कर जब ही। शुभभावन तज प्राणजु तबही॥७॥
स्त्री लिंग छेद सुखकारी। पंचम स्वर्ग देव भयो भारी ॥

तहां सुख भुगते अति के सोई। ताको वर्णन कहां लो होई ॥८॥
निश परतिज्ञा फलअतिभारी। पढ़ो सुनो सबे नर नारी॥
तातें नर नारी सुन लीजे। नित प्रति निश प्रतिज्ञा कीजे ॥९॥
निश कू भोजन करहि जु सोई। पशु सम ते नर नारी होई॥
नरक पशु गति सो नर परे। जो निश भोजन भक्षण करे॥
जो निश त्याग करे नरनारी। तिनको धन्य जन्म अवतारी ॥ १०
ते सब स्वर्ग मुकति पद पावें। जे निश भोजन त्याग करावें॥
ताते नरनारी सुन लीजे। निश कु भोजन कबहु न कीजे॥११॥
इहां जु प्रश्न करे अब कोई। मुनिवर सों भाषे अब सोई॥
तुम भाषी जिनग्रंथन मांहि। मृतक भये फिर जीवे नाहि॥१२॥
कैसे जियो वहसाह कुमार। फिर चेतन पायो सुखकार।
जाको अचिरज हैअब सोय। सोसंदेह मिटावो मोहि ॥ १३ ॥
फेर मुनीश्वर ऐसे कहीं। जाको अचरज कीजे नहीं॥
काटे नाग जबे विकराल। विषमें होय जाय ततकाल ॥ १४ ॥
सब नारी डूबें विष माहि। तन मन खबर रहे कछु नाहि॥
तीन दिवस लौ मरे न कोय। जो कुछ जासु उपाय जु होय ॥१५॥

॥ दोहा ॥

चतुर्वीश पुनि जामलो, ताको अंत न होय।
जीवत ही को जलावते,गुण जाने बिन कोय ॥१६॥
तातें जानों कुंवर वह, विषमें डूबो सोय।
जिन वर नाम थकी सुअब, निर्विष भयो जु होय॥१७॥
इतनी सुन करि के तबै, जाको गयो संदेह।
धन्य मुनि जानों अबै, पाप निवारण एह ॥ १८ ॥

॥ सोरठा ॥

तातें सुनों नरनारि, निश प्रतिज्ञा कीजिये ॥
स्वर्ग मुक्ति दातार, नरभव को जश लीजिये ॥ १९ ॥

॥ चौपाई ॥

निशकीकथायहपूरणभई । भारामल्लि प्रगट करि कहीं ॥
भूल चूक अक्षर जो होय । पण्डित शुद्ध करो सब कोय ॥ २० ॥
पढे सुने अब जो मन लाय । जन्म जन्म के पातिक जाय ॥
दुःख दलिद्र सबजायनसाय । जो यह कथा सुने मन लाय ॥२१॥

॥ दोहा ॥

निश व्रत कथा पूरण भई, पढे सुने नित सोय ॥
सुख पावे ते नर त्रिया, पाप नाश तिन होय ॥२२२॥

॥ इति श्रीनिश भोजन त्याग कथा समाप्त ॥

श्री जिनाय नमः ॥

॥ छोटी निशभोजन भुंजन कथा ॥

॥ कविवर भूधरदासजी कृत ॥

॥ दोहा ॥

नमो सारदा सार बुध, करैं हरैं अघ लेप ।
निश भोजन भुँज की कथा, लिखूं सुगम संक्षेप ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

जंबूदीप जगत विख्यात । भरत खंड छबि कहियत जात ॥
तहां देशकुरुजांगल नाम । हस्तनागपुर उत्तम ठाम ॥ २ ॥

यशोभद्र भूपति गुण बास । रुद्रदत्त दुज प्रोहित तास ॥
अश्वमासतिथिदिनआराध । पहलीपड़वाकियोसराध ॥ ३ ॥
बहुत विनय सों नगरी तने । न्योंत जिमाये ब्राह्मण घने ॥
दानमानसबहीकोदियो । आप विप्र भोजन नहि कियो॥४॥
इतने राय पठायो दास । प्रोहित गयो राय के पास ॥
राज काज कछु ऐसो भयो । करत करावत सब दिन गयो॥५॥
घरमें रात रसोई करी । चूल्हे ऊपर हांडी धरी ॥
हिंग लैन उठ बाहर गई । यहां विधाता औरहि ठई ॥ ६ ॥
मैंडक उछल परो ता माहिं । विप्रि तहां कछु जानो नाहिं ॥
बैंगन छौंक दिये ततकाल । मैंडक मरो होय बेहाल ॥ ७ ॥
तबहु, विप्र नहिं आयो धाम । धरी उठाय रसोई ताम ॥
पराधीन की ऐसी बात । औसर पायो आधी रात ॥ ८ ॥
सोयरहे सब घरके लोग । आग न दीवा कर्म संजोग ॥
भूखो प्रोहित निकसे प्रान । ततक्षिन बैठो रोटी खान ॥ ९ ॥
बैंगन भोले लीनो ग्रास । मैंडक मुँह में आयो तास ॥
दांतन तले चबो नहिं जबै । काढ़ धरो थाली मैं तवै ॥ १० ॥
प्रात हुए मैंडक पहिचान । तौ भी विप्र न करी गिलान ॥
थिति पूरी कर छोड़ी काय । पशु की योनी उपजो आय॥११॥

॥ सोरठा ॥

घूघू काग बिलाव, साबर गिरध पखेरुवा ।
सूकर अजगर भाव, बाघ गोह जल में मगर ॥१२॥
दश भव इहि विधि थाय, दशों जन्म नरक हि गयो ।
दुर्गति कारण पाय, फलो पाप बट बीज वत ॥ १३ ॥

॥ चौपाई ॥

देश नाम करहाट सुखेत । कौशल्या नगरी छबि देत ॥
तहां संगराम सूर भूपाल । बिना युद्ध जीते रिपु जाल॥१४॥
राजा प्रोहित लोमस नाम । ताके तिय लोमा अभिराम ॥
तिनके रुद्रदत्त बर वही । महीदत्त सुत उपजो सही ॥ १५ ॥
खोटी संगति के बस होय । सबै कुलक्षण सीखो सोय ॥
सेवे कुविसन करे न कान । बहुत दरब खोयो बिन ज्ञान॥१६॥
मात पिता तब दियो निकास । मामा के घर गयो निरास ॥
तिन भी तहां न आदर कियो। सीस ढोल पग आगे दियो॥१७॥
मारग के बस पहुंचो सोय । जहां बनारस को वन होय ॥
भेटे साधु मुनिवर आन । नमस्कार कीनो निरमान ॥१८॥
पूछे महीदत्त सिर नाय । मैं क्यों दुखी भयो मुनिराय ॥
पर उपकारी मुनि जन सही । पूरब जन्म कथा सब कही ॥१९॥
निश भोजन तें बिरधो पाप । तातैं भयो जन्म संताप ॥
फिर तिन दियो धर्म उपदेश । जातैं बहुर न होय क्लेश ॥ २०॥
गुरुकी शिक्षा ग्रहव्रत लये । मनके दूर दुक्ख सब गये ॥
कर प्रणाम आयो निज गेह । मात पिता अति कियो स्नेह॥२१॥
स्वजन लोक मन अचरज भयो । देख सुलक्षण सब दुख गयो ॥
राजा बहुत कियो सनमान । भयो विप्र सुत सब सुखमान॥२२॥
बढ़ी संपदा पुन्य सँयोग । छहों कर्म साधे पुनि योग ॥
कियो देव मंदिर बहुभाय । सुवरणमयप्रतमापधराय ॥ २३ ॥
धर्म शास्त्र लिखवाए जान । बहु बिध दियो सुपात्र हि दान ॥
ऐसे धर्म हेत धन बोय । उपजो अंत अच्युत सुर होय ॥ २४॥
बड़ी आयु जहां भोग विशाल । सुख में जातन जानो काल ॥

थित अवसान तहां तैं चयो। भरत खंड भू मानुष भयो ॥२५॥
देश अम्बती नगर उजैन। पिरथीमल राजा बहु सेन॥
प्रेमकारणी राणी सती। तिनके पुत्र भयो शुभमती ॥२६॥
नाम सुधारस परम सुजान। रूपवंत गुणवंत महान॥
योवन बैस विकारन कोय। भोग बिमुख वरते नित सोय॥२७॥
धर्म कथा रसरागी सदा। गीत निरत भावे नहि कदा॥
एक दिना बाड़ी में गयो। बन बिहार देखन चित दियो ॥२८॥
तहां एक जो वृक्ष महान। देषो सघन छांहि छवि वान॥
शाखा प्रतिशाखा बहु जास। बहु विधि पंछी पथिक निवास ॥२९॥
बन विहार कर फिरयो जवै। वज्र दह्यो वृक्ष देख्यो तवै॥
उर बैराग थयो तिहुँ काल। जानो अथिर जगत को ख्याल ॥३०
जो बानिक उपजे कछु लोय। सो सबही थिर होय न कोय॥
बिघटत बार लगे नहीं तास। तन धनकी सम झूठी आस॥३१॥
काल अगनि जगमें लह लहै। सूके तृणसम सबको दहै॥
यह अनादि की अैसी रीत। मोहि उदै समझे विपरीत ॥३२॥
इह विधि बुद्धि यथारथ भई। परमारथ पथ सनमुख ठई॥
राज भोग सों भयो उदास। निसप्रह चित्त गयो गुरुपास ॥३३॥
सतगुरु साख योग पथ लियो। इच्छा छोड़ घोर तपकियो॥
ध्यान हुताशन हिरदे जगी। समता पवन पाय जगमगी ॥३४॥
कर्म काठ दाहे बहु भेव। भयो मुक्त अजरामर देव॥
आतम ते परमातम भयो। आवागमन रहित थिर थयो ॥ ३५
रजनी भुंजकथा बर नई। कथा पुरान समापति भई॥
पाप धर्म को फल इहिभाय। भली लगे सो कर मन लाय॥३६॥

॥ सोरठा छन्द ॥

प्रगट दोष अवि लोय, निश भोजन करये नहीं ।
इहि भवरोग न होय, परभव सबसुख संपजै ॥ ३७ ॥

॥ छप्पै छन्द ॥

कीड़ी वुध वल हरै कंप गद करै कसारी ।
मकड़ी कारण पाय कोढ़ उपजै दुख भारी ॥
जुआँ जलोदर जनै फाँसगल विथा बढ़ावै ।
बाल सबै सुर भंग वमन माखी उपजावै ॥
तालुवे छिद्र बीछू भखत और व्याधि बहु कर हि थल ।
यह प्रगट दोष निशअशनके परभव दोष परोक्षफल॥३८॥

॥ दोहा छन्द ॥

जो अघ इहि दुख करे, परभव क्यों न करेय ।
डसत साँप पीडे तुरत, लहर क्यों न दुखदेय ॥ ३९ ॥
सुवचन सुन डाहार जे, मूरख मुदित न होय ।
मणिधर फण फेरे सही, नदी साँप नहिं सोय ॥४०॥
सुवचन सतगुरु के वचन, और न सुवचन कोय ।
सतगुरु वही पिछानिये, जाउर लोभनहोय ॥ ४१ ॥
भूधर सुवचन साँभलो, स्वपर पक्ष कर वौन ।
समुद रेणुका जो मिले, तोड़े तें गुण कौन ॥ ४२ ॥

इति छोटी निशभोजन भुञ्जन कथा सम्पूर्णम् ।

सूचीपत्र

दिगम्बर जैनधर्म पुस्तकालय लाहौर

यह ग्रन्थ व पुस्तकें हमारे यहां विकती हैं।

- श्रीआत्मानुशासन २)
- तथा जिल्द सहित २।/)
- जैनशास्त्रोच्चारण भाषा)॥
- जैन कथा संग्रह
- सुगुरुशतक भाषा)॥।
- जैन भजन संग्रह
- निशभोजन कथा =)॥
- चारदान कथा
- श्री पद्मपुराण हिन्दी भाषा वचनिका महान् ग्रन्थ श्लोक २३००० मूल्य ८)
- बाईस परीषह संग्रह कठिन शब्दों के अर्थ सहित इसमें चारकवियोंके बनाये हुए चार २२ परीषह पाठ छपे हैं =)
- णमोकार मंत्र का अर्थ ४८ पृष्ठों में =)
- भक्तामर भाषा शब्दोंके अर्थ सहित /)
- भक्तामर संस्कृत हिन्दीअर्थसहितहिन्दी भाषा में शब्दार्थ, अन्वयार्थ भावार्थ भाषा छन्दबन्द पाठ सब इकट्ठे छपे हैं =)
- जैनबाल गुटका प्रथम भाग =)
- राजल नौपाठ संग्रह इस में श्रीनेमिनाथ राजुलजी के नौ कवियो के बनाये हुए नौ पाठ छपे हैं ।/)
- दर्शन कथा भाषा छन्द बन्द ।/)
- शील कथा भाषा छन्द बन्द ।/)
- श्रीपालचरित्र भाषा चौपाई बन्द कठिन शब्दों के अर्थ और जिल्द सहित १॥)
- बारहमासा सीता,)॥।
- दिवाली पूजन /॥
- कर्म चरित्रसार भाषा =)
- जैनदिगम्बर मतके ३०५भाषा जैनग्रन्थों की फैहरिस्त (नामावली) /)
- यमनसेन चरित्र १३२ पृष्ठोंपर श्रीमुनी यमनसेन का वृत्तान्त ।)
- सूरत की बारह खड़ी)॥।
- तत्वार्थ सूत्र मूल सम्पूर्ण /)
- बारह भावना संग्रह)॥।
- आलोचना पाठ अर्थ सहित)॥
- सप्त सभंग तिरंगिणी भाषा १)
- पुरुषार्थ सिद्ध्योपाय अन्वया १)
- पंचास्तिकाय १॥)
- द्वादशानुप्रेक्षा हिन्दी अर्थ सहित ।=)
- ब्रह्मविलास भगवतीदासकृत १॥)
- नित्यनेम पूजा संस्कृत और भाषा ।/)
- बनारसी विलास १॥)
- तत्वार्थ सूत्रटीका सहित ॥।)
- चौवीसी पूजा वृन्दावन १)
- श्रावक वनता बोधनी ॥)
- चरचा शतक भाषा १॥)
- पुण्याश्रव कथा कोष महान ग्रन्थ ३)
- ज्ञानार्णव महान ग्रन्थ ४)
- जैन विवाह पद्धति ॥।)
- रत्नकरंडश्रावकाचार छोटा ।)
- कार्तिकेयानुप्रेक्षा हिन्दी १॥)
- तत्वार्थसूत्र भाषा वचनका ।)